प्रसार शिक्षा निदेशालय
चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर

सितम्बर, 2017 महीने के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने सितम्बर, 2017 माह के दूसरे खवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान सम्बन्धित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में फूलगोभी की दरम्याना किस्में(पालम उपहार, इम्प्रूवड़ जापानीज़, मेघा (संकर) की तैयार पौध की रोपाई करें। रोपाई से पूर्व 250 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 235 किलो ग्राम इफ्को (12:32:16) मिश्रण खाद, 54 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश तथा 105 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। इन्हीं क्षेत्रों में फूलगोभी की पछेती किस्मों (पी.एस.बी.-16, के.-1, के.टी.-25, पूसा सुभ्रा तथा संकर श्वेता, माधुरी, महारानी, 626 इत्यादि), बन्दगोभी (प्राईड आफ इण्डिया, गोल्डन एकड़, पूसा मुक्ता तथा सक्रं वरूण, वहार इत्यादि), गांठ गोभी (ब्हाईट वियाना, पालम टैण्डरनाब, परपल वियाना), ब्रॉकली (पालम समृद्धि, पालम हरीतिका, पालम कंचन व पालम विचित्रा) तथा चाईनीज बन्दगोभी (पालमपुर ग्रीन) की पनीरी दें। पनीरी उगाने के लिए तीन मीटर लम्बी, एक मीटर चौड़ी तथा 10-15 सैं.मी. ऊंची क्यारी में 25-30 किलो ग्राम खूब गली सड़ी गोबर की खाद, 200 ग्राम इफ्को (12:32:16), 20-25 ग्रा. फफूंदनाशक इण्डोफिल एम 45 तथा 10-15 ग्राम. कीटनाशक जैसे थीमेट या फोलीडॉल धूल 5 सैं.मी. मिट्टी की ऊपरी सतह में मिलाने के उपरान्त 5 सैं.मी. पंक्तियों की दूरी पर बीज की पतली बिजाई करें। इन्ही क्षेत्रों में जड़दार सब्ज़ियों जैसे मूली (जापानीज ब्हाईट, चाईनीज पिंक, मीनो अर्ली), शलजम (पी.टी.डब्ल्यू.जी.), गाजर (नान्तीज, चान्तनी, पूसा यम्दाग्नि) तथा पत्तेदार सब्जियों जैसे पालक (पूसा हरित, पूसा भारती), मेथी (आई.सी.-74, पालम सौम्य, पूसा कसूरी) इत्यादि की बिजाई पंक्तियों में 25-30 सैं.मी. की दूरी पर करें। बिजाई के समय 100 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 150 कि.ग्रा. (12:32:16) मिश्रण खाद तथा 15 कि.ग्रा. म्यूरेट आफॅ पोटाश प्रति हैक्टेयर खेतों में डालें।
- निचले एवं मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में मटर की अगेती किस्मों (पालम त्रिलोकी, अरकल, वी.एल.-7 तथा मटर अगेता) की बिजाई 30 x 7.5 सैं.मी. की दूरी पर करें। बिजाई के समय 200 क्विंटल गोबर की गली सड़ी खाद के अतिरिक्त 185 कि.ग्रा. इफ्को (12:32:16) मिश्रण खाद तथा 50 कि. ग्रा. म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। इन्हीं क्षेत्रों में फूलगोभी की पिछेती किस्मों, बन्दगोभी, गाँठ गोभी, मूली, शलगम, गाजर, पालक, मेथी इत्यादि की बिजाई का भी उचित समय चल रहा है।

फसल संरक्षण

- धान में तना छेदक कीट के आक्रमण की स्थिति में (सफेद बालियों का बनना) मिथाइल पैराथियान 50 ई. सी. का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- धान में नेक ब्लास्ट की रोकथाम हेतु ट्राईसाइक्लेजोल (बीम 75 डब्ल्यू.पी.) 18 ग्राम प्रति 30 लीटर/प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें।
- बैंगन में तना एवं फल छेदक सुण्डियों तथा करेला में हड्डा बीटल (कंघी) के नियन्त्रण के लिए कार्बेरिल 50 डब्ल्यू पी. (2 ग्रा. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल

पशुधन

- पशुपालन में हरे चारे का बहुत महत्व है। किसानों को इस पखवाड़े में अपनी घासनियों से अधिक से अधिक घास काट कर और सुखा कर संरक्षित कर लेनी चाहिए। इस समय काटी गई घास पौष्टिकता की दृष्टि से उत्तम होती है। चारे के लिए बरसीम/लुसर्न या जई की बीजाई भी की जा सकती है। वरसीम/लुसर्न में गोभी सरसों मिला कर बिजाई करें ताकि पहली कटाई में ज्यादा चारा प्राप्त हो सके। चारे की कमी के दिनों के लिए मक्की से साईलेज भी बनाया जा सकता है, ताकि पशुओं को दिसम्बर-जनवरी के महीनों में अच्छा व पौष्टिक चारा प्राप्त हो सके।
- इस मौसम में दुधारू पशु, विशेषकर भैंसें, गर्मी में अधिक आती हैं, अतः गर्माने के लक्षणों के लिए पशुओं की निगरानी रखें और समय पर गर्भाधान करवायें। पशुओं के छोटे बच्चों को जन्म के 8-10 दिन बाद सींग रहित करवायें व उनको पेट के कीड़े मारने की दवाई, स्थानीय पशुचिकित्सक से परामर्श करके समय-समय पर पिलाते रहें।
- खुरमुंही के प्रकोप से पशुओं को बचाने हेतू समय पर टीकाकरण करवायें।
- पशुओं में यदि बाह्य परजीवियों की समस्या हो तो तुरन्त पशुचिकित्सक की सलाह लें। इस मौसम में दाना-मिश्रण को उचित जांच के बाद ही खिलाऐं।
- मुर्गियों के अण्डों का उत्पादन बढ़ने हेतू रोशनी (14 से 16 घंटे) का उचित प्रबन्ध करें।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें । अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक) (01894-230395/1800-180-1551) से भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

6/9/2017
निदेशक
प्रसार शिक्षा
6/9/17

प्रसार शिक्षा निदेशलय, चौ. स. कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर द्वारा किसानों के हित में जारी ।

प्रतिलिपि :

1. सयुंक्त निदेशक (सूचना व जनसम्पर्क), चौ.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला (हि.प्र.)
3. प्रभारी, यू.एन.एस.ए, चौ.स.कृ.हि.प्र.कृ.वि., विश्वविद्यालय पेज पर डालने हेतू।

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/- 6287-89 Dated : 6/9/2017

---

* एक हैक्टेयर = 12.5 बीघा या 25 कनाल